(b) The district-wise area in horticulture gardens in Arunachal Pradesh are as under: —

Name of District	Area in ha. (1991-92)
1. Tawang	1281
2. West Kameng	3478
3. East Kameng	829
4. Lower Subansiri	2557
5. Upper Subansiri	2141
6. East Siang.	2484
7. West Siang	3819
8. Lohit	1246
9. Dibang Valley	927
10. Tirap	1119
11. Changlang.	1094
	21262

(c) and (d) The produce is rendered surplus after the feeding fruit processing unit in Siang district. As capacity of the fruit processing unit is only 5 metric tonnes per day of 8 hrs. shift. The unit is commissioned particularly as pilot project.

गुजरात में मृदा और जल-संरक्षण संबंधी योजनाएं

2128. **श्री राम सिंह राठवा** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि गुजरात में केन्द्र द्वारा प्रायोजित मृदा और जल-संरक्षण संबंधी योजनायें क्रियान्वित की जा रही हैं; और

(ख) यदि हां, तो विगत तीन वर्षों के दौरान उनका क्रियान्वयन संबंधी जिला-वार ब्यौरा क्या है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविन्द नेताम) : (क) जी, हां।

(ख) नदी घाटी परियोजनाओं के स्रवण क्षेत्रों में मृदा संरक्षण की केन्द्रीय प्रायोजित योजना गुजरात के चार स्रवण क्षेत्रों, अर्थात् दन्तीवाड़ा, दमन गंगा, माही और उकाई में क्रियान्वित की जा रही है। यह योजना अखिल भारतीय मृदा एवं भूमि उपयोग सर्वेक्षण संगठन द्वारा चिह्नित पनधाराओं को उच्च एवं बहुत उच्च श्रेणियों को कवर करते हुए पनधाराओं के आधार पर क्रियान्वित की जा रही है। विगत तीन वर्षों के दौरान वास्तविक एवं वित्तीय उपलब्धियों का ब्यौरा नीचे दिया गया है।

वर्ष	वास्तविक (000 हैक्टेयर)	वित्तीय (लाख रु० में)
1989–90	1.80	97.43
1990–91	2.24	128.00
1991–92	3.23	200.00

खाद्यान्नों का उत्पादन

2129. **चौधरी हरमोहन सिंह** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि वर्षा की अनियमितता के परिणामस्वरूप पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी भारत में खाद्यान्नों का उत्पादन कम हुआ है;

(ख) वर्षा के अनिश्चितता के कारण किसानों को होने वाली हानि की क्षतिपूर्ति के लिए सरकार की क्या योजना है; और

(ग) विगत तीन वर्षों के दौरान इस योजना के अन्तर्गत किए गए कार्यों का ब्यौरा क्या है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविन्द नेताम) : (क) जी, नहीं। वैसे, पूर्वी और उत्तर पूर्वी भारत सहित देश में जून से सितम्बर के दौरान खरीफ खाद्यान्नों का उत्पादन मानसून की अनियमित वर्षा के कारण अस्थिर रहा।

(ख) और (ग) सरकार की योजना है कि और अधिक क्षेत्र में सिंचाई की जाए ताकि वर्षा की अनिश्चितता के कारण, विशेषकर खरीफ मानसून के दौरान, किसानों को होने वाली हानि को कम किया जा सके। सिंचाई की सुविधाओं का सृजन करने तथा उससे फसल उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से उथले नलकूपों/खुदे कुंओं के निर्माण के लिये छोटे और सीमान्त किसानों को सहायता संबंधी केन्द्रीय प्रायोजित योजना 1988-89 से 1991-92 तक की अवधि के दौरान 12 प्रमुख राज्यों में चल रही है। पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी राज्यों के संबंध में गत तीन वर्षों के दौरान निर्मित नलकूपों/खुदे कुंओं की संख्या नीचे दी गई है :—

राज्य	1989-90 के दौरान निर्मित उथले नलकूप/ खुदे कुंए	1990-91 के दौरान निर्मित उथले नलकूप/ खुदे कुएं	1991-92 के दौरान निर्मित उथले नलकूप/ खुदे कुएं
असम	1952	2242	1696
बिहार	64580	46427	100474
उड़ीसा	17905	11871	11715
पश्चिम बंगाल	11740	14300	2582 (दिसम्बर, 1991 तक)
हरियाणा	शून्य	शून्य	210
उत्तर प्रदेश	188451	201089	201672
मध्य प्रदेश	24484	19864	19143
महाराष्ट्र	2389	1339	838 (अनन्तिम)
गुजरात	1897	2167	2940

उत्तर प्रदेश में खाद्यान्नों का उत्पादन

2130. **चौधरी तुरमोहन सिंह** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) 1992-93 के दौरान उत्तर प्रदेश में कुल कितनी मात्रा में खाद्यान्नों का उत्पादन हुआ है;

(ख) क्या उत्तर प्रदेश सरकार ने उक्त राज्य में खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ाने के लिए कोई व्यापक कार्य-योजना बनाई है और इस संबंध में केन्द्रीय सरकार से उसकी स्वीकृति मांगी है;

(ग) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है; और